रामशंकर दास 'पागल दास'

अपने उपनाम 'स्वामी पागलदास' के नाम से सुपिरिचित इस पखावज-वादक का जन्म 15 अगस्त 1920 को उ०प्र० के देवरिया जनपद के ग्राम मझौली में हुआ। आप कई दशकों तक मंचीय अभिनय से जुड़े रहे

Scanned with CamScanner

और साथ-साथ पखावज-वादन और गायन की शिक्षा भी प्राप्त करते रहे। आपके गुरुओं में सर्वश्री रामकृष्ण दास, स्वामी भगवान दास, बाबा ठाकुर दास, श्री राम मोहनी शरण, बाबा नेपाल सिंह तथा पं० संतशरण 'मस्त' का नाम उल्लेखनीय है।

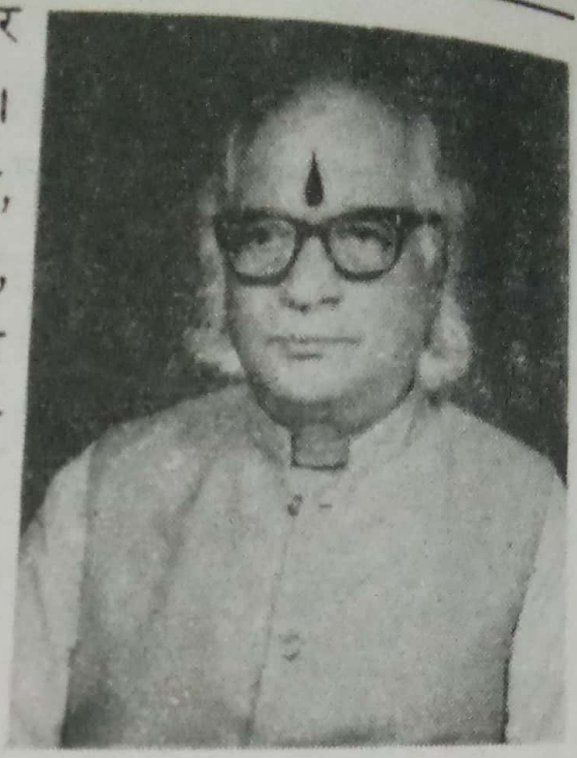

पखावज-वादन में आप महाराज कुदऊ सिंह घराना तथा अवधी घराने का प्रतिनिधित्व करते थे। पहले आप तबला भी बजाते थे, परंतु 1962 से उसे त्याग दिया और केवल पखावज को उच्च स्थान पर प्रतिष्ठित कराने में जीवन अर्पित कर दिया। अयोध्या (उ०प्र०) में 'हनुमत् विश्व कला संगीताश्रम' की स्थापना कर शिक्षा-दीक्षा में जीवन अर्पण करने वाले स्वामी पागलदास के अनेक शिष्य देश-विदेश में फैले हुए हैं। उनमें से कुछ के नाम इस प्रकार हैं—सर्वश्री राज खुशीराम (लखनऊ), रामकिशोरदास (नई दिल्ली), संतोष दास (हरिद्वार), के०के० द्विवेदी (भोपाल), संजय आगले (इंदौर), भक्तराज भोंसले, मुरली महाराज (बम्बई) तथा अयोध्या में सर्वश्री राजकुमार झा, विजय रामदास, टुनटुन एवं के०के० उपाध्याय बंधु आदि।

आपको विद्यालीय शिक्षा बहुत कम मिली थी। परन्तु स्वाध्याय और प्रतिभा के फलस्वरूप आपने मृदंग-तबला प्रभाकर (दो भाग) और तबला कौमुदी (तीन भाग) नामक पुस्तकें लिखीं। आपके अनेक प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में सैकड़ों शोधपरक लेख भी प्रकाशित हो चुके हैं।

श्री रामशंकर दास आकाशवाणी के 'टॉप' श्रेणी के कलाकार थे। आपको जीवन में अनेक सम्मान मिले, जिनमें मुख्य हैं—ताल विलास, उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, मृदंग मार्तण्ड, मृदंग-मणि, मृदंग केसरी, पखावज विज़र्ड, संगत सम्राट, पखावज दास, तबला शास्त्री, नेशनल अकादमी सम्मान, संगीत महामहोपाध्याय, श्रेष्ठ कला आचार्य, नाना पानसे

Scanned with CamScanner

अवार्ड, तुलसी-सम्मान, पखावज रत्न आदि।

इस श्रेष्ठ कलाकार का, अयोध्या में दिनांक 20 जनवरी 1997 की रात्रि को दिल का जानलेवा दौरा पड़ने से निधन हो गया।

Scanned with CamScanner